: चतुर्थ अध्याय :

गोविंद मिश्र के उपन्यासों में चित्रित समाज जीवन की समस्याएँ

चतुर्थ अध्याय

गोविंद मिश्र के उपन्यासों में चित्रित समाज जीवन की समस्याएँ

प्रस्तावना

4.1 राजनीतिक समस्याएँ।

4.1.1 भ्रष्टाचार या रिश्वतखोरी ।

4.1.2 छात्रांदोलन की समस्या ।

4.1.3 हिंसा तथा गुंड़ागर्दी ।

4.2 सामाजिक समस्याएँ।

4.2.1 परिवार विघटन की समस्या ।

4.2.2 नारी समस्या।

4.2.2.1 विधवा समस्या ।

4.2.2.2 बलात्कारित नारी की समस्या।

4.2.2.3 सुंदरता एक समस्या ।

4.2.2.4 कामकाजी नारी समस्या ।

4.2.2.5 शोषित नारी समस्या ।

4.2.3 वैवाहिक समस्याएँ ।

4.2.3.1 अंतर्जातीय विवाह समस्या।

4.2.3.2 बहुविवाह समस्या ।

4.2.3.3 अनमेल विवाह।

4.3 आर्थिक समस्याएँ।

4.3.1 आर्थिक विपन्नता।

4.3.2 बेकारी की समस्या।

4.3.3 रिश्वतखोरी।

4.3.4 मकान की समस्या।

4.3.5 भुखमरी।

4.4 धार्मिक समस्याएँ।

4.4.1 अंधश्रद्धा।

4.4.2 जातिभेद।

4.5 सांस्कृतिक समस्या।

4.5.1 पाश्चात्य प्रभाव समस्या।

4.5.2 एकल परिवार की समस्या।

4.5.3 व्यसनाधीनता की समस्या।

4.5.4 स्वच्छंद प्रेम की समस्या।

4.6 मनोवैज्ञानिक समस्या।

4.6.1 अकेलेपन की समस्या।

4.6.2 घुटनभरी जिंदगी।

4.6.3 यौन समस्या।

निष्कर्ष

प्रस्तावना :-

समाज परिवर्तन की प्रक्रिया के कारण समाज जीवन की समस्याओं का निर्माण होता हैं। नई पीढ़ी पुराने रीति-नीति को ठुकराकर नई वैज्ञानिक दृष्टि से आगे बढ़ने की कोशिश कर रही हैं, जिससे पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी में संघर्ष होता है और संवेदनशील मनुष्य को पशु बनानेवाली परिस्थितियाँ निर्माण होकर समस्याएँ और अधिक भयानक रूप में सामने आती है। एक सजग रचनाकार अपने परिवेश की समस्याओं से अछूता नहीं रह सकता। वह इन समस्याओं को अपने ईर्द-गिर्द देखता है और कुछ समस्याओं से वह गुजर चुका होता है। इसी वजह से उसकी रचनाओं में समस्याओं का जिक्र होता ही है। गोविंद मिश्र जी एक प्रयोगधर्मी सजग रचनाकार है, उन्होंने समाज जीवन की विविध समस्याओं को अपने उपन्यासों में उजागर किया हैं जैसे -

4.1 राजनीतिक समस्याएँ :-

मिश्र जी के उपन्यासों में राजनीतिक समस्याएँ विविध रूप में दिखाई देती हैं। आज राजनीति में स्वार्थ की वृत्ति जादा मात्रा में फैल गई है, जिससे पदलोलुपता राजनेताओं में दिखाई देती हैं। राजनीति का समाज सेवा यह उद्देश्य नष्ट होता जा रहा है और शासन व्यवस्था में भ्रष्टाचार या रिश्वतखोरी जैसी समस्या निर्माण होने लगी है। आज राजनीतिक लोग अपने व्यक्तिगत फायदे के लिए युवाओं को भड़काते हैं, जिससे छात्रांदोलन होते हैं और हिंसा, गुंड़ागर्दी से समाज में अशांति फैलती हैं। मिश्र जी के उपन्यासों में चित्रित राजनीतिक समस्या निम्नप्रकार से हैं -

4.1.1 भ्रष्टाचार या रिश्वतखोरी :-

राजनीति में शासन व्यवस्था महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। मिश्र जी ने वह अपना चेहरा उपन्यास में केशवदास को प्रतिनिधी बनाकर दफ्तरी माहौल के भ्रष्टाचार या रिश्वतखोरी वृत्ति को स्पष्ट किया है। केशवदास का शुक्ला के स्पेशल पे पोष्ट के लिए रू.5000/- लेना तथा अन्य व्यक्तियों से भेंट स्वरूप वस्तुएँ लेना यह शासन व्यवस्था में स्थित भ्रष्टाचार को दिखाता है।

लाल पीली जमीन उपन्यास में राजनेता बोस साहब स्कूल के प्रेसिडेंट हैं, वे स्कूल को पार्टी के कामों के लिए इस्तेमाल करते हैं तथा स्कूल में भर्ती के वक्त बिल्डिंग फंड के नाम पर फीस लेते हैं और बाद में स्कूल के सदस्य आपस में पैसे बाँटकर अपनी जेब भरते हैं। पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में न्याय व्यवस्था में भ्रष्टाचार व रिश्वतखोरी दिखाई देती है। मनोहरलाल जी एक सफल वकिल है, वे रिश्वतखोर दिखाई देते हैं जैसे इस बारे में राजन का कथन है - "रम्मो ने वे नुस्खे भी बताना शुरू कद दिए जो उसने मायके में सीखे थे, ... वे पैंतरे जिन्हें मुसिफ और जज लोग रम्मो के पिता मनोहरलाल जी पर इस्तेमाल करते थे।"[1] इस तरह न्याय

व्यवस्था भ्रष्ट दिखाई देती हैं। सन्नी के प्रिय नेता राजनीति के द्‌वारा भ्रष्ट दिखाई देते हैं क्योंकि वह रातोरात पिछड़े जाति का सहारा लेकर अपनी सरकार बचाने को कोशिश करते हैं।

इस तरह मिश्र जी ने उपन्यासों द्‌वारा समाज में स्थित भ्रष्टाचार तथा रिश्वतखोरी स्पष्ट की हैं, जिसका मूल राजनीति है।

4.1.2 **छात्रांदोलन की समस्या :-**

मिश्र जी ने छात्रांदोलन की समस्या का यथार्थ वर्णन लाल पीली जमीन उपन्यास में किया है जो राजनीति की देन है। राजनेता बोस साहब स्कूल में प्रिसिंपल के पद पर अपना आदमी बिठाना चाहते हैं। लेकिन छात्र उनके प्रिय मास्टर कंठी को प्रिंसिपल के रूप में चाहते हैं, जो एक योग्यता संपन्न मास्टर हैं। इसी मांग के कारण छात्रांदोलन भड़कता है। पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में भी लेखक ने स्वातंत्रता आंदोलन में सन 1940 ई. में बनारस हिंदू युनिवर्सिटी के छात्रों का अंग्रेज सरकार के खिलाफ छात्रांदोलन दिखाया है, जिसे अंग्रेज सरकार पूरा दबाने की कोशिश करती हैं। सन 1990 ई. में प्रधानमंत्री ने अपनी सरकार को बचाने के लिए पिछड़ी जाती तथा हरिजनों को नौकरी में आरक्षण रखने के कारण दिल्ली के छात्रों ने कॉलेज और युनिवर्सिटी छोड़कर छात्रांदोलन शुरू किया।

मिश्र जी ने छात्रांदोलन को राजनीति का महत्त्वपूर्ण पहलू माना हैं।

4.1.3 **हिंसा तथा गुंड़ागर्दी :-**

भ्रष्ट राजनीति के कारण राजनेता स्वार्थी बने हैं। अपने व्यक्तिगत फायदे के लिए हिंसा तथा गुंड़ागर्दी फैलाते हैं। लाल पीली जमीन उपन्यास में बोस जैसे स्वार्थी राजनेता के कारण छात्रांदोलन भड़कता है और वहाँ हिंसा का वातावरण बनाता है। आदि भयावह हिंस्त्रक स्थिति का निर्माण छात्रांदोलन में हुआ है। साथ ही छात्रांदोलन में कुछ गुंड़े घुसकर छात्रों की दिशाभूल करते हैं जिससे जुलूस पर पुलिस गोलियाँ चलाती है और अनेक छात्र घायल होते हैं। जैसे "थोड़ी देर में वहाँ खून ही खून हो गया जो नीचे गिरे वे पुलिस की मजबूत बूटों से रौंदे जा रहे थे।"[2] इस तरह हिंसा की आग छात्रांदोलन में फैली है। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना लिखते हैं - "उपन्यास बताता है किस तरह छात्रशक्ति को राजनीतिक व्यक्ति अपना उल्लू सीधा करने के लिए इस्तेमाल करता है, उसे हिंसा की आग में कैसे उछालता है फिर भी कैसे उसका हितैषी बना है।"[3]

अत: छात्र राजनीति के कारण हिंसा में फँस जाता है। पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में स्वतंत्रता आंदोलन में अंग्रेज सरकार के अन्याय/अत्याचार से हिंसात्मक वातावरण बना है तथा भारत पाकिस्तान के बँटवारे के कारण जातिवादी दंगे भड़कने से अनेक लोगों की जानें गई। सन 1990 ई. में प्रधान मंत्री ने पिछड़े जाति के लिए नौकरी में आरक्षण रखने से छात्र रास्तोंपर आकर तोड़-फोड़ और आत्मदाह कर हिंसा को बढ़ावा

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

देते हैं। अत: इंदिरा गांधी की हत्या गुंड़ागर्दी हिंसा ही है। राजनीति आज हिंसा, गुंड़ागर्दी का पर्याय बनी है।

मिश्र जी ने भ्रष्टाचार या रिश्वतखोरी, छात्रांदोलन से हिंसा गुंड़ागर्दी को बढ़ावा देनेवाली राजनीतिक समस्याओं का वर्णन सरल रूप में किया है।

4.2 सामाजिक समस्या :-

व्यक्तिगत समस्या ही आगे चलकर सामाजिक बन जाती है क्योंकि, व्यक्तिगत समस्या जब अपने दायरें से बड़ा रूप धारण कर व्यापक बनती है तब पूरा समाज इससे प्रताड़ित होता है जिससे वह समस्या सामाजिक कहलाती है। मिश्र जी ने सामाजिक समस्याओं को अपने उपन्यासों द्वारा प्रस्तुत किया हैं। जिनमें नारी समस्याएँ, वैवाहिक समस्याएँ सम्मिलित हैं। साथ ही परिवार विघटन जैसी समस्या मिश्र जी ने यथार्थ रूप में पाठकों के सामने रखी है जो आज के समाज जीवन में पाई जाती है।

4.2.1 परिवार विघटन की समस्या :-

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ज्यादातर परिवार विघटित हुए हैं। मिश्र जी ने इसी समस्या का वर्णन कर भारतीय समाज में स्थित टूटते परिवार की पीड़ा को व्यक्त किया है।

तुम्हारी रोशनी में उपन्यास में यही समस्या सुवर्णा के परिवार के माध्यम से स्पष्ट हुई हैं। सुवर्णा का पति रमेश पहले सुवर्णा के मित्रों पर शक नहीं करता था लेकिन कुछ दिन बाद वह शक्की बनकर सुवर्णा को उनसे मिलने पर पाबंदियाँ लगाता है। सुवर्णा को यह स्वीकार नहीं है। परिणामत: सुवर्णा रमेश से अलग रहने का निर्णय लेकर अपनी मम्मी के पास जाती है। तभी एक खत के जरिए रमेश के अनैतिक संबंध का पता उसे चलता है। इसी कारण सुखी परिवार पूरा टूट जाता है और उनके बच्चे किसके पास रहे ? यह सवाल पैदा होता है। इस तरह की परिवार विघटन की समस्या दिखाई देती है।

पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में तीन पीढ़ियों के परिवार विघटन का वर्णन अंकित है। जोगेश्वरी देवी का परिवार बड़े बेटे राधेलाल की मृत्यु के बाद अन्य बेटों की बँटवारे की माँग से टूटता है। आगे राधेलाल का परिवार भी तीनों बेटों के अलग-अलग शहर में नौकरी करने के कारण वहीं बस जाने से टूटा है। लेखक इस प्रकार लिखते हैं -

"मोहन नीड़ से उड़ा क्या इसी तरह एक-एक उड़ जाएँगे । क्या होगा तब उस घर का जो अम्मा ने मुंशी जी ने तिनका-तिनका बटोर कर बनाया क्या यहीं नियति है।"[4]

इस तरह यहाँ जोगेश्वरी तथा राधेलाल का परिवार टूटता हुआ दिखाया है। राधेलाल का बेटा राजन जिसकी तीन संतानें हैं। एक बेटी ससुराल में है, बड़ा बेटा विदेश में छोटा एक ही शहर में है पर अलग फ्लैट

में राजन की बीमारी के वक्त तीनों अपने काम में मशगुल हैं। इस तरह राजन का परिवार टूटा हुआ दिखाई देता है। प्रो.प्रेमशंकर लिखते हैं -

"पाँच आँगनोवला घर शीर्षक से टूटती सम्मिलित परिवार व्यवस्था का संकेत करता हैं।"[5]

उपर्युक्त उदाहरणों द्वारा मिश्र जी ने परिवार विघटन की त्रासदी का यथार्थ चित्रण किया है जो समाज की एकता को तोड़ता हैं।

4.2.2 नारी समस्याएँ :-

प्राचीन युग से नारी की समस्याएँ बढ़ती ही जा रही है। हिंदी साहित्यकारों ने नारी समस्या को अपने साहित्य में महत्त्व दिया है। आधुनिक साहित्यकार मिश्र जी नारी को आदरणीय नजरों से देखते हैं, इसी वजह से उन्होंने नारी की विविध समस्याओं को निम्नप्रकार से चित्रित किया है -

4.2.2.1 विधवा समस्या :-

नारियों की समस्याओं में विधवाओं की समस्याएँ महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। विधवा विवाह की स्वाभाविक वासना की अतृप्ति तथा आर्थिक परावलंबन से उसके सामने कई समस्याएँ उभरती हैं। मिश्र जी ने विधवा नारी की समस्याओं का अपने उपन्यासों में यथार्थ चित्रण किया है जो आज समाज के तीनों वर्गों में दिखाई देती हैं।

लाल पीली जमीन उपन्यास की विधवा शन्नो अपनी वासना तृप्ति के लिए लखोटिया दुकानदार से संबंध रखती है। इसी संबंध की चर्चा शन्नो के बेटे के मित्रों में होती है, इसी कारण सब उसे चिढ़ाते हैं। परिणामत: केशव की माँ और शन्नो में झगड़ा होता है, झगड़े में केशव की माँ उसे कहती है -

"तेरे क्या काम है सबको मालूम है।"[6] इस तरह शन्नो को अपनी वासना पूर्ति के कारण झगड़े का सामना करना पड़ता है।

पाँच आँगनोवाला घर में जोगेश्वरी देवी विधवा होने के बाद, घर की पूरी जिम्मेदारी खुद वह और बड़ा बेटा राधेलाल सँभालता है। राधेलाल के सुराजी होने बाद घर पर आर्थिक संकट आता है। आगे राधेलाल की मृत्यु के बाद तो जोगेश्वरी के घर का बँटवारा अन्य बेटों की जिद से होता है और इसी का सद्मा न सहने से जोगेश्वरी देवी का अंत हो जाता है। राधेलाल की विधवा पत्नी शांतिदेवी भी चाहती है, उसके बेटे घर छोड़कर नौकरी करने लिए बाहर न जाए लेकिन एक-एक करके तीनों बेटे घर के बाहर निकल पड़ते हैं और शांति अकेली रह जाती है।

इस तरह मिश्रजी ने जोगेश्वरी देवी तथा शांतिदेवी इन विधवाओं के माध्यम से अकेलापन, घर का बँटवारा, आर्थिक विपन्नता जैसी विधवा समस्याओं को सामने रखा है।

4.2.2.2 बलात्कारित नारी समस्या :-

विवाह से पहले स्त्री-पुरूषों के जो शारीरिक संबंध बनते हैं, उसे समाज स्वीकार नहीं करता। जब कोई पुरूष जबरदस्ती से स्त्री से शारीरिक संबंध रखता तब समाज उस पर शीलभ्रष्टता का लांछन लगाता है और बहिष्कृत कर देता है। बलात्कारित नारी की और भी अन्य समस्याओं को मिश्र जी ने लाल पीली जमीन उपन्यास द्वारा स्पष्ट किया है।

बस्ती का झल्लू पंडित स्कूल में पढ़ानेवाली मासूम शांति पर बलात्कार करता है। इसी वजह से शांति समाज के डर से हताश होकर जहर खाकर आत्महत्या करती है। बस्ती के लोग तरह-तरह की बातें करते हैं जैसे "ये होता है लड़की को घर के बाहर जाने देने का फल" और कहते हैं शांती की मताई का दोष है ज्वान-जवान बिटिया इस उम्र तक क्वांरी रखी जाती है कहीं।"[7]

इस तरह के तानें समाज शांति तथा शांति की माँ को देता है, बल्कि उन्हें जरूरत सहानुभूति की है। उपन्यास की अन्य पात्र शैलजा को बस्ती का आवारा कल्लू भगाकर ले जाता है और जबरदस्ती से शादी करता है। शैलजा भागकर अपने पिता के घर वापस आती है और पिता से कहती हैं "मैं मजबूर थी ...... मुझसे जबरदस्ती की गई। क्या करती"[8] पिता मास्टर कौशल्या चीखकर आगे कहते हैं "मर तो सकती थी .... तूने हमें कहीं का न रखा हमारी इज्जत धो दी और अब यहाँ आई है ..... क्या करेगी कोन ब्याहेगा तुझे अब।"[9] यहाँ शैलजा की बिकट स्थिति में पिता भी उसे खरी-खोटी सुनाते हैं।

बलात्कारित नारी को, समाज लांछित करके उसके मरने के बाद भी तानें देता है। सगे भी उसको समझ नहीं पाते आदि समस्या से पीड़ित मजबूर नारी का मिश्र जी ने वर्णन किया है जो समाज में पाई जाती है।

4.2.2.3 सुंदरता एक समस्या :-

नारी आर्थिक स्वावलंबन के लिए घर के बाहर पड़ी है। वह नौकरी या कोई व्यवसाय शुरू करती है। इससे पर-पुरूषों से उसका संबंध बढ़ता है। समाज में स्थित वासनाग्रस्त पुरूष उन्हें हमेशा परेशान करते हैं। मिश्र जी ने इसे एक समस्या के रूप में सामने रखा है।

वह अपना चेहरा की मिस रचना आजवाणी सुंदर है। ट्रेनिंग में, उपन्यास का नायक मि.शुक्ला दाखिल होता है तब उसके अफ़सर साथी 'रचना' के बारे में कहते हैं - "हमारे बैच की चीज पसंद आयी।"[10] यहाँ सुंदर नारी की तरफ समाज की देखने की दृष्टि अच्छी नहीं है। उसे चीज कहकर उसका मजाक उड़ाया जाता है। सुंदर रचना का अधेड़ सिनियर अफ़सर केशवदास भी उसका फायदा उठाता है और रचना इन्कार भी नहीं करती। रचना के बैच के और अफ़सर अमरू और खुद नायक उसके पीछे पड़े हैं, वे उसे पाना चाहते हैं। इसी कारण नायक अंदर-ही-अंदर घुटता रहता है। नारी सुंदर होने के कारण उसे कई वासनात्मक नजरों का सामना करना पड़ता है और इसका यथार्थ वर्णन लेखक ने किया है।

तुम्हारी रोशनी में उपन्यास की नायिका सुवर्णा सुंदर शिक्षित, नौकरी करनेवाली आधुनिक नारी है। उसकी सुंदरता के कई दीवानें हैं। सुवर्णा शादी-शुदा होने के बावजुद भी वे उसका साथ चाहते हैं। सुवर्णा मित्र अनंत को कहती है "ये लोग कैसे घूर कर देखते हैं उफ्।"[11] सुवर्णा पति रमेश, बच्चों और अनंत के साथ मेला देखने जाती है तब अनंत देखता है कि, "लोग उसे घूरने लग जाते हैं पहले तो पता ही न चलता पर अहसास होते ही वह अचकाकर लौट आती ... खुबसूरत होना गुनाह है इस देश में।"[12] सुवर्णा का सौंदर्य ही आखिर में उसका संसार उध्वस्त करता है। रमेश को सुवर्णा का उसके सुंदरतालोलुप मित्रों से मिलना अच्छा नहीं लगता। इसी वजह से वह सुवर्णा को उनसे न मिलने की ताकीद करता है। इससे सुवर्णा के व्यक्ति स्वातंत्र्य पर बंधन आता है।

सुंदरता की वजह से स्त्री को जाने-अनजाने में कई समस्याओं का सामना करता पड़ता है। मिस रचना जैसी नारियाँ अपने व्यक्तित्त्व के लिए उसका इस्तेमाल करके फायदा उठाती हैं, जो समाज में शीलभ्रष्ट नारी का प्रतिनिधित्त्व करके भारतीय नारी की प्रतिभा पर कालिख लगाती हैं।

4.2.2.4 **कामकाजी नारी समस्या :-**

आज समाज में नारी को शोषण मुक्त करने के लिए शिक्षा तथा आर्थिक स्वावलंबन आवश्यक है। लेकिन आर्थिक स्वावलंबन आज नारियों के लिए कई समस्या लेकर खड़ा है। मिश्र जी ने समाज में स्थित आर्थिक स्वावलंबी और नौकरीपेशा नारी की समस्याओं का वर्णन किया है।

वह अपना चेहरा उपन्यास की नायिका रचना अजवाणी प्रशासन में उच्च पद पर नियुक्त है। पुरूष प्रधान समाज में वह शिक्षित होकर भी विवश है। आखिर में वह विवशता को ही अपने नुसार ही बना लेती है। रचना और सिनिअर अफ़सर केशवदास के अनैतिक संबंध हैं। रचना केशवदास के बर्ताव का इन्कार भी नहीं कर सकती क्योंकि, वह ज्युनिअर अफ़सर है। केशवदास को रचना के घर देखकर मि.शुक्ला चकित होते हैं, रचना को उसके आगे पीछे करते देखकर शुक्ला सोचता है - "जिस महिला में अपने मन के करने का आत्मविश्वास बराबर रहा हो, वैसी आदत शुरू से रही हो .... उसकी ऐसी क्या मजबुरी हो गई।"[13] यहाँ रचना का बेबसी भाव देखकर शुक्ला का सर चकरा जाता है। इस तरह रचना जैसी नौकरीपेशा नारी को अपने सिनिअर अफ़सर के सामने बेबसी का भाव लेकर चलना पड़ता है।

तुम्हारी रोशनी में उपन्यास की सुवर्णा प्रशासन में उच्च पद पर नियुक्त है। उसे हर बार समय का ध्यान रखना पड़ता है। सुबह से रात तक हर काम टाईम पर करती है। उसे पति रमेश के साथ चाय पीने के लिए भी वक्त नहीं होता है। एक दिन इसी को लेकर दोनों में बहस होती हैं। इस तरह नौकरीपेशा नारी अपने पति को ज्यादा समय नहीं दे पाती है।

मिश्र जी ने नौकरीपेशा नारी की समस्याओं को अपने उपन्यासों द्वारा प्रस्तुत किया है।

4.2.2.5 शोषित नारी समस्या :-

मिश्र जी ने नारी शोषण की समस्या को महत्त्वपूर्ण मानकर अपने उपन्यासों में उसका यथार्थ वर्णन किया है।

लाल पीली जमीन उपन्यास में केशव के चाचा ने अपनी बहू को चैलों से मार कर घर से भगा दिया, उसके पहले भी वह उसका शोषण करता रहा है। अन्य पात्र थल्ले सुनार, झल्लु पंड़ित अपनी पत्नियों को पीटकर नारी शोषण करते हुए दिखाई देते हैं। जादव जी के घर की लड़कियों को दिन-रात घर की चार दीवारी में बंद कर उनके नैसर्गिक विकास क्रम को रोककर शोषण किया जाता है। सुरेश, कल्लू, पंडित जैसे गुंड़े नारी पर बलात्कार कर उनका शोषण करते हैं। नारी का अन्य प्रकार से भी शोषण पुरूष करता हुआ दिखाई देता हैं।

तुम्हारी रोशनी में उपन्यास की नौकरीपेशा आधुनिक नारी सुवर्णा का पति रमेश उसके व्यक्ति स्वातंत्र्य पर बंदिश लगाता है और जब वह उससे अलग होती है, तब रमेश बच्चों को अपने पास रखकर उसे तड़पाता है। इस तरह यहाँ आधुनिक नारी का शोषण समाज में होता रहा हैं।

पाँच आँगनोवाला घर की जोगेश्वरी देवी को पति शराब के नशे में बंद कमरे में बहुत पीटता है। इस तरह स्वतंत्रता पूर्व की नारी अपने पति के हाथों पीटती हुई दिखाई देती है। छोटू आज का नौजवान है । वह पत्नी को अपने विचारानुसार चलने के लिए बाध्य करता है। जब वह विरोध करती है, तब उसे पग-पग पर अपमानित करता है। आखिर में जबरदस्ती से उसे तलाख देने के लिए मजबूर करता है और तलाख लेकर खुद स्वच्छंद मुक्त जीवन बीताता है।

मिश्र जी ने नारी समस्या को अपने ईर्द-गिर्द देखा है, और उसीका यथार्थ वर्णन वे अपने उपन्यासों के कुछ प्रतिनिधि पात्रों द्वारा प्रस्तुत कर, नारी शोषण की भीषण समस्या को पाठकों के सामने रखते हैं।

4.2.3 वैवाहिक समस्या :-

विवाह को भारतीय समाज में अधिक महत्त्व है क्योंकि, इसी वजह से स्त्री-पुरूष एक साथ रहकर अपना वंश आगे बढ़ाते हैं। समय परिवर्तन तथा समाज की वैचारिक दृष्टि में बदलाव आने के कारण विवाह की समस्या निर्माण हुई है। जैसे अंतर्जातीय विवाह, बहु विवाह, अनमेल विवाह आदि विवाह समाज के लिए समस्याएँ बने हुए हैं। मिश्र जी ने इसी समस्या को अपने उपन्यासों द्वारा प्रस्तुत किया है।

4.2.3.1 अंतर्जातीय विवाह :-

अंतर्जातीय विवाह आज हो रहे हैं। फिर भी आज का शिक्षित समाज उसे स्वीकारने के लिए जल्दी तैयार नहीं होता। ऐसे विवाह के कारण उनके बच्चों की तरफ देखने की समाज की दृष्टि कुछ असाधारण होती है। वह अपना चेहरा उपन्यास में केशवदास का अंतर्जातीय विवाह हुआ है उसकी बेटी रेश्मा की तरफ नायक शुक्ला जब आकर्षित होता है तब वह रेश्मा के बारे में सोचता है -"हिंदू और मुसलमान माँ-बाप की यह लड़की बेहद अकेली रही थी।"[14] समाज सोचता है कि, अंतर्जातीय विवाह से उनके बच्चे अकेलापन महसूस करते हैं।

इस तरह अंतर्जातीय विवाह को स्वीकार करने के लिए समाज सहज तैयार नहीं होता है।

4.2.3.2 बहु विवाह :-

समाज में बहु विवाह का प्रचलन हिंदू मुसलमान ईसाई धर्म में जारी है। लेकिन आदर्श समाज में बहुविवाह अच्छी बात नहीं समझी जाती। मिश्र जी ने उपर्युक्त विवाह का वर्णन कर उससे निर्मित समस्या को स्पष्ट किया है।

लाल पीली जमीन उपन्यास का पात्र थल्ले सुनार जिसका दूसरा ब्याह एक नाटी, गढ़ी स्त्री से होता है, लेकिन वह उसे कई बार पीटता हुआ दिखाई देता है। सर्वेश की भी तीन पत्नियाँ मर चुकी हैं और चौथा विवाह सोला साल की मालती से करता है। यहाँ बहु विवाह से नारी शोषण तथा अनमेल विवाह होते हैं, जो समाज के लिए समस्या बने हैं।

4.2.3.3 अनमेल विवाह :-

दहेज न देने की हैसियत, अंधश्रद्धा, विचारों में भिन्नता आदि कई कारणों से अनमेल विवाह समाज में होते दिखाई देते हैं। मिश्र जी ने अनमेल विवाह की समस्या पाठकों के सामने अपने उपन्यासों द्वारा रखी है।

लाल पीली जमीन उपन्यास में मालती का विवाह अनमेल विवाह है। सर्वेश की पहली तीन पत्नियाँ मर चुकी हैं। सर्वेश उम्र में भी मालती से कई साल बड़ा है। शादी होने के बाद मालती खुद को बूढ़ी महसूस करती है। मालती को किसी भी काम में उत्साह नहीं है, उसे सब बासी लगता है। इस तरह मालती अनमेल विवाह का शिकार बनी हुई है। पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास के छोटू का विवाह भी अनमेल है। पत्नी के विचार और छोटू के विचारों में मेल नहीं है । इसी विचार भिन्नता के कारण उनका विवाह अनमेल बना है। परिणामत: दोनों का विवाह विच्छेद हो जाता है।

अनमेल विवाह से नारी शोषण तथा विवाह विच्छेद हो रहे हैं। इसी वजह से अनमेल विवाह एक समस्या के रूप में समाज में दिखाई देते हैं, जिसका यथार्थ वर्णन मिश्र जी ने किया है।

4.3 आर्थिक समस्या :-

मनुष्य की सबसे भयावह समस्या आर्थिक समस्या है। आर्थिक समस्या से कई समस्याएँ निर्माण होती हैं क्योंकि अर्थ ही समाज का आधार है। आज आर्थिक विपन्नता, बेकारी, रिश्वतखोरी, असफल प्रेम, भुखमरी, मकान की समस्या आदि समस्याएँ आर्थिक समस्या के कारण उभर रही हैं। मिश्र जी ने अपने उपन्यासों द्वारा इन समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है।

4.3.1 आर्थिक विपन्नता :-

वह अपना चेहरा उपन्यास में नायक शुक्ला मध्यवर्गीय नोकरीपेशा युवक है। उसका पैसे बचाना आर्थिक विपन्नता को स्पष्ट करता है। ऑफिस से छूटते ही वह मित्र अमरू की गाड़ी से जाना चाहता है क्योंकि - "घर से दफ्तर का फासला खासा है, पैसे बचाने के अलावा अमरू के पीछे लग जाना धक्कम धक्का से उबार लेता है।"[15] इस तरह शहरों में रहनेवाले कुछ मध्यमवर्गीय लोगों को आर्थिक विपन्नता में ही दिन गुजारने पड़ते हैं। पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में राजन जब सन्नी चाचा को अपने घर रखने की बात रम्मो से कहता है तब रम्मो राजन को उसके तनख्वाह की याद दिलाती है जो कम है। उस तनख्वाह में मेहमान जादा दिन रूके तो बोझ लगते हैं। इस तरह आर्थिक विपन्नता रिश्तों में दरारें पैदा करती हैं।

लाल पीली जमीन उपन्यास में स्थित निम्न-मध्य तथा निम्नवर्ग की आर्थिक विपन्नता दिखाई है। बड़े एक साधारण घर का लड़का है वह पढ़ाई करके, नौकरी पकड़ कर अपने परिवार का बोझ हलका करना चाहता है। लेकिन प्रिया शांति की मौत की वजह से उसे मानसिक आघात पहुँचता है। इसी कारण उसको इम्तिहान देना मुश्किल लगता है। लेखक का कथन बड़े की आर्थिक विपन्नता को स्पष्ट करता है। "जैसे कुछ दिनों ऐसा लगता रहा वह इम्तिहान नहीं दे पाएगा लेकिन साल छोड़ने के लायक उसकी आर्थिक स्थिति नहीं थी।"[16] आर्थिक विपन्नता से मनुष्य को अपनी भावनाओं को दबाना पड़ता है। इस तरह आर्थिक विपन्नता से मनुष्य व्यवहारी बनता है, जिसका मूल आर्थिक समस्या है। यहीं मिश्र जी ने उपर्युक्त समस्या द्वारा दिखाया है ।

4.3.2 बेकारी की समस्या :-

आर्थिक समस्या ही बेरोजगारी निर्माण करती है। जनसंख्या बढ़ने से तथा कुछ लोगों के धनसंचय करने के कारण आर्थिक कमी महसूस होती है। और बेकारी बढ़कर समाज का विकास नहीं होता है।

लाल पीली जमीन उपन्यास में नारायण तथा कल्लू बेकारी की समस्या से ग्रस्त हैं। नारायण बस्ती के मंदिर में पूजा करता है, वह झल्लू पंडित का चेला है, उसके बुरे काम नारायण चुपचाप देखता है। क्योंकि यहाँ का काम छूट गया तो दूसरा काम उसे नहीं मिलेगा और रहना, खाना, पीना कहाँ होगा। यह सोचकर वह पंडित

की गुलामी करता है। इस तरह इस बेरोजगारी के कारण नारायण और छबी का प्रेम असफल दिखाया है। कल्लू शैलजा से प्रेम करता है। लेकिन वह चौबे के आखाड़े में कोई छोटा काम करके अपनी उदर-पूर्ति करता है । वह इतना पढ़ा लिखा भी नहीं है की कोई दूसरा मोटा काम या नौकरी करें इसी बेरोजगारी की वजह से वह शैलजा से शादी करने के सपने नहीं देखता। इस तरह कल्लू का प्रेम यहाँ बेरोजगारी के कारण असफल दिखाया है।पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में मोहन के कथन से गाँवों तथा कस्बों में जो बेकारी है यह स्पष्ट होता है। "लोग क्या करें .... गाँवों-कस्बों में रोजी-रोटी, कमाई का कोई जरिया हैं नहीं, इसलिए शहरों की तरफ दौड़ते हैं। फिर बम्बई ....." [17]

मिश्र जी ने बेरोजगारी की समस्या को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। यह उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट होता है।

4.3.3 **रिश्वतखोरी :-**

आर्थिक समस्या से रिश्वतखोरी समाज में फैलती जा रही है। मिश्र जी ने इस समस्या को अपने उपन्यासों द्वारा उजागर किया है।

लाल पीली जमीन उपन्यास में शिवहरे एक नीची जातवाला साधारण पुलिस है । इसी वजह से वह कल्लू से शैलजा के घर के गहने चोरी करवाता है और खुद उसे रखता है और कल्लू की मदद करता है। कोतवाल भी बोस साहब का आदमी होने के कारण उनसे तबादले के लिए रू. 5000/- लेता है। और फिर कातिल शिवमंगल जो बोस साहब का आदमी है, उसको कानूनी कार्यवाही से बचाता है। यहाँ लेखक ने पुलिस के साधारण कर्मचारी जिनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है उनमें रिश्वतखोरी दिखाई हैं।

पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में राजन की तनख्वाह कम है और रम्मो की माँगे ज्यादा, जो वह पूरी नहीं कर सकता। इसी कारण वह रिश्वत लेना शुरू करता है।

प्रशासन में तनख्वाह कम होने के कारण आर्थिक समस्या निर्माण होती है और वह दूर करने लिए रिश्वतखोरी निर्माण होकर समाज को दीमाग की तरह कुरेदती है। इसी समस्या का यथार्थ वर्णन मिश्र जी ने किया है।

4.3.4 **मकान की समस्या :-**

आर्थिक समस्या से मकान की समस्या लोगों को त्रस्त करती है। क्योंकि आज मकान की कीमत इतनी बढ़ गई है की मध्यवर्ग तथा निम्नवर्ग मकान खरीद या जल्दी बना नहीं सकता।

पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में छोटे आर्थिक समस्या के कारण राजन के हिस्से का मकान अपने उपयोग में लाता है। इसी वजह से राजन उस पर मुकदमें बाजी करता है। इस तरह छोटे मकान की

समस्या से परेशान है। मोहन को भी अवकाश प्राप्ति के बाद किराए के मकान में रहना पड़ता है। क्योंकि उसपर अपने दो भाइयों के पढ़ाई की जिम्मेदारी थी। जिससे उसका कोई घर बन नहीं सका सारी तनख्वाह उन पर खर्च हो जाती है और मोहन आखिर तक घर नहीं बना सकता।

उपर्युक्त उदाहरणोंद्वारा आर्थिक समस्या के कारण मकान की समस्या उभरती है और मनुष्य इसी समस्या के कारण अपना जीवन ठीक से नहीं जी सकता।

4.3.5 भुखमरी :-

आर्थिक समस्या निम्नवर्ग को जादा त्रस्त करती है क्योंकि, उनके पास न तो पैसा है, न ही शिक्षा है। जिसके कारण उनमें से कुछ लोगों को भुखमरी की समस्या का सामना करना पड़ता है।

पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास मे जोगेश्वरी देवी के घर में घुसा चोर भुखमरी का शिकार है। भुख लगने के कारण वह चोरी के लिए घर में घुँसता है, ताकि कुछ खाने को मिले। यहाँ लेखक ने चोर के माध्यम से समाज में स्थित भुखमरी का यथार्थ चित्रण किया है। मिश्र जी ने समाज में स्थित आर्थिक समस्या को कई रूपों में सामने रखा है, जिससे समाज का ज्यादातर मध्यवर्ग तथा निम्नवर्ग त्रस्त हैं।

4.4.4 धार्मिक समस्याएँ :-

भारतीय समाज में धर्म को जादा महत्त्व है, क्योंकि धर्म हमें शुद्ध आचरण करने लिए बाध्य करता है। धर्म ईश्वर का सच्चा रूप है इसी कारण धर्म में श्रद्धा, पूजा, प्रार्थना, रूढ़ी-परंपरा देवी-देवता आदि मुख्य स्थान रखते हैं। लेकिन वैचारिक भिन्नता के कारण धर्म में कुछ बाह्यांड़बर , कर्मकांड़, अंधश्रद्धा, जातिभेद, रूढ़ि-परंपरा आदि समस्याएँ देखी जाती है। सामाजिक रचनाकार हमेशा धार्मिक समस्या को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करता है और उसके दुष्परिणामों को समाज के सम्मुख लाता है। मिश्र जी भी एक सामाजिक लेखक होने के कारण उन्होंने अपने उपन्यासों में धार्मिक समस्याओं का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है, वे धार्मिक समस्याएँ इस प्रकार हैं -

4.4.1 अंधश्रद्धा :-

धर्म के नाम पर समाज में अंधविश्वास, अंधश्रद्धा दिखाई देती है। ज्यादातर गाँवों, कस्बों में अज्ञानता के कारण भूत-प्रेम, देवी-देवताओं की पूजा, बली, मनौतियाँ आदि प्रकार किए जाते हैं। मिश्र जी ने लाल पीली जमीन उपन्यास में कस्बाई जीवन में स्थित अंधश्रद्धा को चित्रित किया है। लक्ष्मण के घर के किवाड़ पर चढ़े दो सापों को देखकर जमा हुए लोग घबराते हैं, इनमें से एक कहता है - "अरे छकिया को बुलाओ न काई ... वह झाड़-फूंक भी जानता है।"[18] उनमें से एक आदमी साप को मारने के लिए आगे बढ़ता है तो दूसरा

कहता है - "यह न कराओ महाराज, कहीं कोई चूक गई तो चोट खाया सांप तो बदला जरूर लेता है, छोड़ता नहीं आज नहीं तो कल ... लेगा जरूर।"[19] यहाँ साँप को मारकर, अंदर के लोगों को बाहर निकालने के बजाय लोग ऐसी अंधविश्वास भरी बातें करते हैं। सर्वेश की शादी के वक्त उसकी कुंडली देखना, शनि साढ़े -साती पूजा के बाद खत्म होना, इससे उसकी नई जिंदगी शुरू होना आदि अंधश्रद्धात्मक बातों पर विश्वास रख मालती का विवाह सर्वेश के साथ किया जाता है। इस तरह मालती यहाँ अधेड़ विधुर सर्वेश की पत्नी बनकर अंधश्रद्धा का शिकार बनी है।

तुम्हारी रोशनी में उपन्यास में अनंत के कथन से कस्बाई क्षेत्र में स्थित अंधविश्वास स्पष्ट होता है "पाने की खुशी जैसे कोई पाप ... गँवाने में ही सतत खुश। आगे कभी नहीं आना... हमेशा पीछे रहना आदमी पर भरोसा कम, ईश्वर पर ज्यादा, हर चीज ईश्वर पर टालना... आत्मविश्वास शून्य के बराबर।"[20] अंधश्रद्धा ने मनुष्य को आत्मविश्वास शून्य बनाकर कर्मकांड, बाह्याडंबर करनेवाला पुजारी बनाया है। पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में जोगेश्वरी देवी का तथा अन्य साधुओं का पंचघाट पर कार्तिक स्नानके लिए जाना तथा इलाहाबाद के कुंभ मेले में सबसे पहले स्नान करने के लिए साधु-संतों की ईर्ष्या और उनका निठल्लापन आदि सब देखकर भी उनके ही पैर छूना, यह सब अंधश्रद्धा को स्पष्ट करता है।

मिश्र जी ने समाज में स्थित अंधश्रद्धा का हू-ब-हू वर्णन किया है, जिसमें कई विकृतियाँ दिखाई देती हैं।

4.4.2 जातिभेद :-

धर्म में जाति का महत्त्वपूर्ण स्थान है क्योंकि, जाति के आधार पर ही मनुष्य का कर्म निश्चित होता है। लेकिन आज धर्म-जाति, राजनीति रूतबे के हथियार बनने लगे हैं।

लाल पीली जमीन उपन्यास में मिश्र जी ने जातिभेद के कई उदाहरण दिए है जैसे केशव का मुँह-बोले मामा के गले न लगना क्योंकि, वह दूसरी जाति का है। चौबे जी ओर जादव जी अपने अपने जातियों के लोगों को इकट्ठा करते हैं और समाज में अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाते हैं जैसे - "आर-पार रूतबे के लिए टक्कर जबर्दस्त होती, गुट बनते .... वे जूझते और जुझाए भी जाते, क्योंकि इस रूतबे की प्यास कुछ घरों और जातियों को भी थी।"[21] केशव के पिता के मन में यह भाव है कि, अपनी जाति के ही लोग हमेशा काम आते हैं। इसी कारण झल्लु पंडित जो कुम्हार जाति का है, उसके मनमाने व्यवहार से तंग आकर वे उसकी हत्या करवाने की योजना बनाते हैं। इस तरह मनुष्य अपनी नीचली जातियों के लोगों की हत्या करने से नहीं डरता।

पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में मिश्र जी ने जोगेश्वरी देवी के माध्यम से स्वतंत्रता पूर्व समाज में स्थित जातिभेद को स्पष्ट किया है। जोगेश्वरी देवी गाना-गाना,बजाना नीचली जातवालों का काम समझती है ।

राजन जब मित्र मजीद के साथ एक थाले में खाना खाता है तब जोगेश्वरी देवी राधेलाल को कहती है - "लड़के को भी मुसलमान बनाया जा रहा है।"[22] मिश्र जी ने इसी उपन्यास में सन 1990 ई. के जाति भेद को दिखाया है। सन 1990 ई. भूतपूर्व प्रधान मंत्री ने अपनी सरकार को बचाने के लिए पिछड़ी जातियों को नौकरी में आरक्षण रखा। इस तरह का जातिभेद समाज में दिखाई देता है।

प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक चलती आयी यह जातिभेद समस्या समाज में अन्य समस्या को उभरने का मौका देती है। यहीं मिश्र जी पाठकों के सामने उपर्युक्त उदाहरणों द्वारा रखने में सफल हुए हैं। धार्मिक समस्या समाज में अंधश्रद्धा, जातीयता और आदि कई रूपों में दिखाई देती है। मिश्र जी ने धार्मिक समस्या को अंधश्रद्धा तथा जातीयता द्वारा स्पष्ट किया है।

4.5 सांस्कृतिक समस्या :-

संस्कृति वह जीवन पद्धति है जिसके आधार से मनुष्य आगे बढ़ता है। भारतीय प्राचीन संस्कृति उच्च मानी गई है लेकिन परकिय आक्रमण, औद्योगिकरण, शहरीकरण से संस्कृति बदलती रही और कुछ सांस्कृतिक समस्या उभरने लगी। मिश्र जी संस्कृतिप्रिय रचनाकार होने से उनके उपन्यासों में संस्कृति के यथार्थ वर्णन के साथ-साथ सांस्कृतिक समस्या भी स्पष्ट हुई हैं।

4.5.1 पाश्चात्य प्रभाव समस्या :-

संस्कृति पर पाश्चात्य प्रभाव से विदेशी संस्कृति का आगमन हुआ। अत: भारतीय रूढ़ि-परंपरा में अधिक मात्रा में बदलाव आया और संयुक्त परिवार का विघटन हुआ, जिससे मनुष्य संकुचित बना और रिश्तों में दरारें पड़ने लगी। पाश्चात्य प्रभाव के कारण आधुनिक साधनों का आकर्षण, विदेश जाने की लालसा, औपचारिकता आदि सांस्कृतिक समस्याएँ निर्माण हुई। वह अपना चेहरा उपन्यास में केशवदास और नायक शुक्ला के संबंध औपचारिक और व्यवहारिक ही दिखाएँ हैं। केशवदास और रचना के संबंधों पर विदेशी प्रभाव दिखाया है।

तुम्हारी रोशनी में उपन्यास में सुवर्णा के जीवन पर पाश्चात्य प्रभाव है। जिसके कारण उसका अपने मित्रों से संबंध रखना तथा घर में आधुनिक साधनों का आकर्षण और विवाह विच्छेद का निर्णय आदि समस्याएँ दिखाई देती हैं। पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में राजन के घर पर विदेशी प्रभाव पड़ने से उसके तीनों बच्चे अलग-अलग रास्ते चलते दिखाई देते हैं। बंटू विदेश में एलिस के साथ और छोटू एक ही शहर में मगर दूसरे फ्लैट में रहता है ,बिट्टो अपना हिस्सा माँगती है और राजन की बिमारी में राजन अकेला अस्पताल में पड़ा है।

इस तरह पाश्चात्य प्रभाव से आत्मीयता का नाश, औपचारिकता को बढ़ावा, आधुनिक साधनों का आकर्षण, नई पीढ़ी की मनमानी आदी प्रवृत्तियाँ आज समाज में बढ़ी हैं। उसका यथार्थ वर्णन मिश्र जी ने पाश्चात्य प्रभाव की समस्या में किया।

4.5.2 एकल परिवार की समस्या :-

भारतीय संस्कृति में संयुक्त परिवार आदर्श परिवार माने गए हैं। आधुनिकीकरण, शहरीकरण के कारण विदेशी संस्कृति के एकल परिवार का निर्माण होने लगा, जिससे संयुक्त परिवार नष्ट होने लगे। मिश्र जी ने इसी एकल परिवार की समस्या का यथार्थ वर्णन लाल पीली जमीन और पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में किया है।

लाल पीली जमीन में एकल परिवार जैसे केशव का और मास्टर कौशल का परिवार है। केशव के परिवार को पूरा मुहल्ला सताता है और मास्टर कौशल की बेटी को कल्लू भगाकर ले जाता है और उसके साथ बलात्कार कर , जबरदस्ती से शादी करता है। इस तरह कौशल जी उसे ढूँढ़ते- ढूँढ़ते परेशान हो जाते हैं तथा केशव के घर पर मुहल्ले के गुंड़ों द्वारा पत्थरों को फेंकना, उनके साथ झगड़े करना आदि से केशव के पिता वह मुहल्ला छोड़ने का निर्णय लेते हैं। इस तरह एकल परिवार, अन्य व आकस्मिक घटना के कारण बिखर जाता है।

पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में भी मोहन, राजन, छोटे, श्याम इनके एकल परिवार है। इनमें से मोहन, छोटे मकान की समस्या से त्रस्त है। तथा श्याम अपनी कम तनख्वाह के कारण आर्थिक विपन्नता में अपना परिवार चला रहा है। राजन का परिवार भी बिखर गया है। उसके छोटे बेटे छोटू का विवाह विच्छेद होने से राजन के परिवार की बदनामी होती है। बड़ा बेटा विदेशी लड़की ऍलिस के साथ शादी करता है और वही रहता है। इस तरह एकल परिवार की अनेक समस्याएँ आज संस्कृति की समस्या बनी हुई है।

मिश्र जी ने अपने उपन्यासों द्वारा एकल परिवार की संस्कृति की समस्या का यथार्थ वर्णन कर समाज के सामने एकल परिवार की दूरावस्था रखी है।

4.5.3 व्यसनाधीनता की समस्या :-

व्यसनाधीनता आज बड़ों के साथ युवाओं में बढ़ने से वह एक संस्कृति बनी है। जो एक भीषण समस्या है। मिश्र जी ने इस भीषण समस्या का चित्रण अपने उपन्यासों में किया है।

वह अपना चेहरा उपन्यास में केशवदास सिगारेट पीते-पीते दफ्तरी या दूसरा कोई काम करता है। मि.शुक्ला, अमरू भी सिगारेट समय-समय पर पीते हैं। एक सम्मान में दिए जानेवाले पार्टी में बिअर पीने के लिए मि.शुक्ला आतुर है जैसे - "एक कमरे में बद ... चुपचाप .... चुपचाप.. कुछ बोतलें सफाचट करके मुँछे पोंछते हुए जब हम नीचे लाउन में आए तो केशवदास वहाँ पहले से ही जमा हुआ था।"[23] इस तरह आज पार्टी

बिअर के बिना अधूरी मानी जाती है।

तुम्हारी रोशनी में उपन्यास में सुवर्णा एक भारतीय नारी होने पर भी कभी-कभी शराब पीती है। सुवर्णा के अन्य मित्र विनय, श्याम, रवि, अनंत, आदि शराब पीते हैं। रवि विनय से कहता है - "तुम उदास क्यों हो, माना कि इन दिनों तुम्हारे यहाँ सूखा चला रहा पर चलो .. यह देखो ड्रिंक आयी। उठाओ चढ़ाओ ... देखो फिर कैसी नदियाँ बनती हैं।"[24] यहाँ शराब से मनुष्य अपना तनाव भूल जाता है मगर व्यसनाधीनता बढ़ती है। यहाँ उच्चशिक्षित, उच्चपदस्थ लोगों में व्यसनाधीनता आम बात है, मगर समाज के लिए समस्या है।

पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में छोटू का कॉलेज के दिनों में सिगारेट , कभी - कभी शराब भी पीना यह बर्ताव आज के कॉलेज के नवयुवक का प्रतिनिधित्व करता है। छोटू शादी के बाद तलाख न होने की वजह से सामर्थ्य से बाहर शराब पीकर खुद को बर्बाद करता है आदि शहरी नवयुवकों की व्यसनाधीनता को पाठकों के सामने रखने में मिश्र जी सफल हुए हैं।

मिश्र जी ने लाल पीली जमीन में उपन्यास में झल्लू पंड़ित, मुल्तन तथा शिवमंगल कल्लन व्यसनाधीन है। इन लोगों का गांजा, बीड़ी, भंग पीना कस्बाई नशापान को दर्शाता है। पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में घनश्याम का दिन रात भंग के नशे में रहना तथा गोवर्धन चाचा का तमाकू खाना, गुटखा बनाना आदि व्यसनाधीनता के लक्षण है जो स्वतंत्रता पूर्व समाज के साथ-साथ आज भी दिखाई देते हैं। मिश्र जी ने समाज में स्थित व्यसनाधीनता को अनेक पात्रों को प्रतिनिधि बनाकर सामने रखा है। जो समाज की प्रगति के लिए घातक है।

4.5.4 स्वच्छंद प्रेम :-

संस्कृति के परिवर्तन से आज कई समस्याएँ समाज को नैतिकता हीन बना रही हैं। जैसे- स्वच्छंद प्रेम । यह आज सांस्कृतिक समस्या बनने से समाज में प्रेम और विवाह के मायने बदल रहे है। और आज भारतीय संस्कृति पर विदेशी संस्कृति का प्रभाव जादा पड़ा है, परिणामत: स्वच्छंद प्रेम जैसी समस्या उभर रही है।

तुम्हारी रोशनी में उपन्यास की सुवर्णा अपने मित्रों के साथ आत्मीक संबंध रखकर स्वच्छंद प्रेम को बढ़ा रही है। जिसके कारण पति रमेश उसके व्यक्ति स्वातंत्र्य पर पाबंदियाँ लगाता है, लेकिन सुवर्णा उससे अलग रहने का फैसला कर अपना दांपत्य जीवन नष्ट करती हैं। वह अपना चेहरा उपन्यास की रचना भी स्वच्छंद प्रेम के कारण अनेक सहकर्मियों से अपनत्त्व भरे संबंध बनाती है जैसे- गोपी, शुक्ला, केशवदास, अमरू आदि लोगों के साथ वह स्वच्छंद प्रेम का आधार लेकर चलती है। समाज में स्वच्छंद प्रेम को महत्त्व देनेवाली नारियाँ जैसे रचना और सुवर्णा को प्रतिनिधि बनाकर मिश्र जी ने आज की यथार्थ स्थिति को सामने रखा है।

समाज में पुरूष भी स्वच्छंद प्रेम से आगे बढ़ते है जैसे - वह अपना चेहरा का मि.शुक्ला, तुम्हारी रोशनी में उपन्यास के पात्र अनंत, श्याम, मोहन और रवि। और पाँच आँगनोवाला घर का छोटू उसके रूपम के साथ जो संबंध है वह स्वच्छंद प्रेम को दर्शाते हैं।

मिश्र जी ने अपने उपन्यासों द्‌वारा स्वच्छंद प्रेम को प्रस्तुत किया है जो समाज के विवाह बंधन पर प्रश्नचिह्न लगाता है। इस तरह मिश्र जी ने सांस्कृतिक समस्या में पाश्चात्य प्रभाव, व्यसनाधीनता, एकल परिवार, स्वच्छंद प्रेम आदि समस्याओं का यथायोग्य वर्णन कर उन्हें स्पष्ट किया है।

4.6 मनोवैज्ञानिक समस्या :-

मनोविज्ञान मन का विज्ञान है। जिसमें मनुष्य मन की क्रियाओं तथा बर्ताव का अध्ययन किया जाता है। आधुनिक मनोवैज्ञानिक जैसे एडलर, युंग, फ्रायड ने मनुष्य के मन का अध्ययन कर मनुष्य की प्रवृत्तियों को सामने रखा है, जिसमें से कुछ प्रवृत्तियाँ समाज के लिए समस्या बनती है। अहंभावना, भय, अंर्तद्‌वंद्‌व, कुंठा, वहशीपन, लालसा, स्वार्थ, पागलपन, हीनता का बोध जैसी प्रवृत्तियाँ आज समाज में अन्य समस्याओं को निर्माण कर रही है। मिश्र जी ने अपने उपन्यासों द्‌वारा कुछ मनोवैज्ञानिक समस्याओं को सामने रखा है जैसे अकेलेपन की समस्या, घुटनभरी जिंदगी यौन समस्या आदि ।

4.6.1 अकेलेपन की समस्या :-

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जनता ने जो सपने देखे थे वे पूरे नहीं हुए हैं। राजनेता स्वार्थी पदलोलुप बन गए और राष्ट्रीय मोहभंग की स्थिति सामने आयी। मनुष्य में कुठा, निराशा, घुटन जैसी वृत्तियों ने प्रवेश कर मनुष्य को अकेले बनाने का मुख्य कारण बनी।

लाल पीली जमीन उपन्यास में केशव अकेलेपन की समस्या से पीड़ित है। शिक्षाव्यवस्था में स्थित अन्याय, भ्रष्टाचार, गुंड़ागर्दी, नकल करने की वृत्ति से केशव को स्कूल, जो ज्ञान का मंदिर है, वह एक आखाड़ा बना हुआ दिखाई देता है तथा माता के अनैतिक संबंध पिता की अपनी परेशानियाँ जिससे उसे अपनत्त्व, ममत्त्व नहीं मिलता है। इसी कारण वह अकेलेपन का शिकार हुआ है। डॉ.चंद्रकांत बांदिवडेकर लिखते है - "केशव के अकेलेपन में नि:शक्त और दयनीय पिता की मजबूरी का जितना हाथ है उससे कही अधिक उसकी माता की व्यभिचारी वृत्ति का भी है। अति सयंत ढंग से उस चित्रण में गोविंद मिश्र ने केशव की तीव्र व्यथा की गहनता का सशक्त एहसास कराया है।"[25] केशव जैसे नवयुवक का अकेलापन देश के भविष्य के लिए हानिकारक है। केशव का मित्र सोहन भी अकेलापन महसूस करता है लेखक लिखते है - "जो अकेलापन ... केशव के अंदर कहीं घर कर रहा था। वह सोहन का आकार लेकर तब बाहर खड़ा था।"[26] सोहन अपने पिता के जुआरी , घुमक्कड़ तथा माँ न होने कारण अकेलापन महसूस करता था।

तुम्हारी रोशनी में उपन्यास का अनंत अकेलेपन के व्यक्ति का प्रतिनिधित्त्व करता है जो अकेलेपन का ही साथी बन चुका है। जैसे अनंत का कथन - "क्या मैं अपने आप से भाग रहा हूँ नहीं अपने अकेलेपन का मैं अभस्त हो चुका हूँ।"[27] समाज में ऐसे कई व्यक्ति अकेलेपन से ग्रस्त दिखाई देते हैं। पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में शांतिदेवी के पति के मृत्यु तथा सास की मृत्यु के बाद और सभी बेटे शहरों में जाने के बाद अकेलापन महसूस करती है और इसी में उसका अंत हो जाता है।

मिश्र जी ने यहाँ अकेलेपन की समस्या को उजागर करके आम आदमी की पीड़ा को समझने की कोशिश की है और इसके कारण समाज में संकुचित वृत्ति, घुटनमय जीवन, मनोरूग्ण जैसी हानिकारक विकृतियों को दर्शाया हैं।

4.6.2 घुटनभरी जिंदगी :-

आज समाज में घुटनमय जिंदगी जीने के लिए सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिस्थितियाँ ही जिम्मेदार हैं। क्योंकि बदलते परिवर्तन ने धन को महत्त्व प्राप्त हुआ है और इन परिस्थितियों का विकृत रूप सामने आकर मनुष्य मन से दब जाता और घुटनभरी जिंदगी जीता रहता है। मिश्र जी ने इसी समस्या का वर्णन वह अपना चेहरा उपन्यास का नायक शुक्ला के माध्यम से किया है।

शुक्ला रचना से प्यार करता है लेकिन रचना और केशवदास के अनैतिक संबंध होने से वह अंदर-ही-अंदर तिल-तिल रचना के लिए मरता है। और केशवदास का स्पेशल पे पोस्ट के लिए शुक्ला से पाँच हजार रूपये लेना, इस तरह की सरकारी दफ्तर की सड़नभरी, भ्रष्टाचारी जिंदगी से वह मन से टूट जाता है और घुटनभरी जिंदगी का सामना करता है। लाल पीली जमीन उपन्यास में मालती का सर्वेश के साथ विवाह होते ही वह खुद को अधेड़ विधूर सर्वेश जैसी बूढ़ी महसूस करने लगी। उसे सब काम, घर की वस्तुएँ बासी लगने लगती है, शृंगार, हँसना सिर्फ दिखावे के लिए करती है। इस तरह मालती की घुटनभरी जिंदगी उन मासूम लड़कियों का प्रतिनिधित्त्व करती है जो अनमेल विवाह की शिकार है।

तुम्हारी रोशनी में उपन्यास की नायिका पर पति रमेश बंदिश लगाता है जिसके कारण वह घुटनमय जिंदगी कुछ ही दिनों तक जीती है। लेकिन जब उसके सहने की सीमा टूट जाती है तब वह रमेश से अलग रहने का फैसला करती है। सुवर्णा जैसी कुछ नारियाँ एक सीमा के अंदर ही घुटनभरी जिंदगी जी सकती है। यह आज के नारी की सच्ची परिस्थिति है। पाँच आँगनोवाला घर उपन्यास में राजन का जीवन घुटनमय दिखाई देता है। पत्नी रम्मो का उस पर अधिकार हर वक्त जताना और राजन का अपने पाँच आँगनोवाला घर के प्रति लगाव इन दो उलझनात्मक स्थिति से गुजरने से राजन अंदर-ही-अंदर टूटा हुआ दिखाया है। ऊपर से तीनों संतानों का निठ्ठलापन, निकम्मेपन से वह घुटनभरी जिंदगी जी रहा है। आखिर यह सहन न होने से एक दिन उस पर दिल का दौरा पड़ता है और ऑपरेशन करने की नौबत आती है। इस तरह घुटनभरी जिंदगी में मनुष्य को आकस्मिक

दिल का दौरा पड़ सकता है।

मिश्र जी ने समाज में स्थित तीनों वर्गों की इस मनौवैज्ञानिक समस्या का यथार्थ वर्णन किया है जिससे मनुष्य अपना विकास नहीं कर पाता।

4.6.3 **यौन समस्या :-**

काम की अतृप्त प्यास ही यौन समस्या निर्माण करती है। जैसे डॉ.अर्जुन चव्हाण जी कहते हैं - "काम की तृप्ति से मन प्रकृत रहता है। परंतु उसकी अतृप्ति से वह विकृत हो जाता है। इस से व्यक्ति का जीवन अंशात हो जाता है और कभी वह निषिद्ध कर बैठता है तो कभी मानसिक रोग का शिकार हो जाता है।"[26] मिश्र जी ने इसी समस्या को अपने उपन्यासों द्वारा प्रस्तुत किया है।

वह अपना चेहरा उपन्यास में अधेड़ केशवदास और मिसेस शर्मा दोनों अनैतिक संबंध रखकर अपनी यौन कामना पूरी करते हैं लेकिन इससे मिसेज शर्मा के पड़ोसी उनपर चिढ़कर उनके खिलाफ कार्यवाही करने की योजना बनाते हैं। मि.शुक्ला का केशवदास की बेटी रेश्मा और मिस.रचना को चूमना यौन-विकृती का ही रूप है। तुम्हारी रोशनी में उपन्यास की सुवर्णा के मित्र अनंत, सोम, दीपक, सुवर्णा को पूरी तरह से पाना चाहते हैं। इस तरह ये सभी यौन वृत्ति से ग्रासित है। सुवर्णा का पति रमेश अपनी सहकर्मी उर्वशी के साथ शारीरिक संबंध रखकर यौन प्यास बुझाता है।

लाल पीली जमीन उपन्यास में पंड़ित की तथा सुरेश की यौन भावना एक विकृत रूप में दिखाई देती है। पंडित शांति के साथ बलात्कार करता है लेकिन शांति बदनामी के डर रो आत्महत्या करती है। सुरेश भट्ट की लड़की के साथ बलात्कार कर उसकी छोटी बेटी को भी अपनी वासना का शिकार बनाने की इच्छा रखता है। कल्लू भी शैलजा के साथ बलात्कार कर मासूम शैलजा की जिंदगी बर्बाद करता है। मिश्र जी ने यहाँ यौन समस्या से कुछ नारियाँ अपनी जिंदगी तक गँवा देती है यह दिखाया है जो आज की सद्य स्थिती है।

इस तरह मिश्र जी ने मनोवैज्ञानिक समस्या में अकेलेपन की समस्या घुटनभरी जिंदगी यौन समस्या आदि से समाज की मनोवृत्ति को स्पष्ट किया है।

निष्कर्ष :-

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि समाज की विसंगत स्थितियों से समाज जीवन की समस्याएँ निर्माण हुई हैं। मिश्र जी ने अपने उपन्यासों द्वारा समाज जीवन की समस्या को पाठकों के सामने रखा है। समाज जीवन की समस्या में राजनीतिक समस्या महत्त्वपूर्ण मानी है। शासन व्यवस्था तथा अन्य क्षेत्रों में भ्रष्टाचार तथा रिश्वतखोरी की राजनीतिक समस्या वह अपना चेहरा का केशवदास, लाल पीली जमीन के बोस साहब के द्वारा स्पष्ट होती है। राजनेता की कूटनीति के कारण शिक्षा व्यवस्था में छात्रांदोलन भड़क रहे हैं। जिसका

यथार्थ वर्णन मिश्र जी बोस साहब तथा पाँच आँगनोवाला घर के सन्नी के प्रिय नेता को प्रतिनिधि बनाकर करते हैं। जिससे समाज में हिंसा गुंड़ागर्दी फैल रही है। छात्रों की माँगे पूरी न होने पर वे तोड़-फोड़,आत्मदाह आदि हिंसा तथा गुंड़ागर्दीवाले बुरे काम करते हैं यहीं मिश्र जी ने दिखाया है।

सामाजिक समस्याएँ हर आदमी को कुरेदती रही है। इसमें परिवार विघटन से बच्चे माता के साथ या पिता के साथ रहे, यह समस्या तुम्हारी रोशनी में की सुवर्णा के बच्चों के द्वारा दिखाई है। आर्थिक समस्या तथा पाश्चात्य प्रभाव के कारण पाँच आँगनोवाला घर की शांति देवी, राजन का परिवार विघटित होता है। इस तरह आज संयुक्त परिवार का महत्त्व कम हो रहा है और वे टूटकर एकल परिवार निर्माण हो रहे हैं।

नारी समस्या में विधवा नारी को स्वाभाविक वासना की अतृप्ति, परिवार विघटन, अकेलेपन की समस्या से गुजरना पड़ता है। विवेच्य उपन्यासों की विधवाएँ जैसे शन्नो, जोगेश्वरी देवी, शांतिदेवी उपर्युक्त समस्याओं का सामना कर रही हैं। इस तरह शन्नो जैसी कुछ विधवाएँ अनैतिकता से चलती है तो कुछ विधवाएँ नैतिकता से अपना जीवन बिता रही हैं। शांति जैसी बलात्कारित नारी समाज से डरकर आत्महत्या करती है तो शैलजा जैसी बलात्कारित नारी को कसूर न होते हुए भी पिता की खरीखोटी सुननी पड़ती है। इस तरह बलात्कारित नारी के प्रति कोई सहानुभूति नहीं देखता यहीं मिश्र जी पाठकों के सामने रखते हैं। सुंदर नारी को एक चीज समझा जाता है, उसे कई वासनात्मक नजरों का सामना करना पड़ता है। कुछ अफ़सर उसे भोगते है।तो रमेश जैसे पति सुंदर पत्नी पर बंदिश लगाते हैं। रचना, सुवर्णा जैसी नारियों को उपर्युक्त समस्या का सामना करना पड़ता है। कामकाजी नारी शोषण का शिकार बनी है। बेबस, समय के कमी के कारण पति-पत्नी में झगड़े दसरे दिखाई देते हैं। यही मिश्र जी सुवर्णा के माध्यम से स्पष्ट करते हैं। नारी शोषण नारी पर बलात्कार कर तलाख देकर उसके व्यक्ति स्वातंत्र्य पर बंदिश लगाकर, पीटकर हो रहा है। नारी की यह सच्ची कहानी मिश्र जी कुछ प्रतिनिधि नारी पात्रों के माध्यम से सामने रखते हैं।

विवाह की समस्या के कारण विवाह बंधन शिथिल हो रहे हैं। अंतर्जातीय विवाह के कारण उनके बच्चों की तरफ शुक्ला जैसे लोग कुछ अलग दृष्टि से देखते हैं। बहुविवाह के कारण समाज में नारीशोषण, अनमेल विवाह हो रहे हैं जैसे - मालती , थल्ले सुनार का विवाह। अनमेल विवाह से नारी घुटनभरी जिंदगी जी रही है। ऐसे विवाह के लिए कुछ मात्रा में आर्थिक समस्या जिम्मेदार है। आर्थिक विपन्नता का सामना शुक्ला, राजन, श्याम जैसे कई मध्य तथा निम्नवर्गीय लोग पैसे बचाकर करते हैं। तो आज सन्नी चाचा जैसे मेहमान का घर आना बोझ लगता है। इस तरह रिश्तों में आर्थिक समस्या से दरारें पड़ती है और आदमी व्यवहारी, भावनाहीन बन रहा है। बेकारी जैसी भयावह समस्या से युवक हर काम में असफल हो रहे हैं। लेकिन कुछ लोग इस समस्या को मिटाने के लिए रिश्वतखोर बन गए हैं। ज्यादातर प्रशासन सेवा के निम्नतर कर्मचारी जैसे -शिवहरे पुलिस, कोतवाल औँर उच्चतर कर्मचारी जैसे राजन अपनी पत्नी की माँग को पूरा करने लिए रिश्वत लेते हैं। इस तरह मिश्र जी रिश्वतखोरी की समस्या का मूल अर्थ को मानते हैं। आज मकान की कीमतें आसमान छू रहीं है इसी

कारण मध्यवर्गीय मोहन, छोटे जैसे लोगों के सामने मकान की समस्या खड़ी है। निम्नवर्ग आर्थिक समस्या के कारण भुखमरी से त्रस्त होकर रोटी की चोरी करके दयनीय जीवन बीता रहा है।

समाज में धर्म की समस्या जैसे अंधश्रद्धा जातीयता से अनमेल विवाह होते हैं जो मालती का हुआ है झाड़फूंक कर्मकांड़ आदि के साथ जातीय गुठ बन रहे हैं जो खांदिया मुहल्ले में दिखाई देते हैं। तथा जाति की रक्षा के लिए केशव के पिता जैसे लोग कत्ल करने के लिए भी आगे पीछे नहीं देखते हैं। इस तरह धर्म का असली रूप मिश्र जी हमारे सामने रखते हैं।

जब समाज की संस्कृति पर विदेशी संस्कृति का आक्रमण होता है । तब औपचारिकता, व्यावहारिकता से रिश्तों में दरार संघर्ष दिखाई देता है जैसे केशवदास-शुक्ला, राजन-मोहन के संबंध है। केशव को मास्टर कौशल के, राजन के एकल परिवार को सामाजिक सुरक्षितता नहीं मिलती । इसी कारण पूरा परिवार बिखर जाता है। इस तरह एकल परिवार की समस्या को मिश्र जी यथार्थ रूप में स्पष्ट करते हैं। व्यसनाधीनता शहरों, गाँवों, कस्बों में बढ़ती जा रही है। केशवदास जैसे आदमी का हर वक्त सिगारेट पीना, सुवर्णा का शराब पिना व्यसनाधीनता को बढ़ावा दे रहा है। शिवमंगल, पंडित, गोवर्धन , बाँके, जैसे लोग गांजा तमाकू खाकर खुद के फेफड़े जला रहे हैं। स्वच्छंद प्रेम के कारण चरित्र जैसी कोई चीज समाज में नहीं रही है। मिश्र जी आज की पीढ़ी के स्वच्छंद प्रेम की वृत्ति को एक समस्या के रूप में सामने रखते हैं जो आदर्श समाज के लिए ठीक बात नहीं है।

मनोवैज्ञानिक मन की समस्या को समाज की समस्याओं का मूल मानते हैं। बच्चों का अकेलेपन माँ-बाप का व्यभिचार, शिक्षा व्यवस्था की बिगड़ी वृत्ति तथा माँ-बाप का प्यार, ममता न मिलने से बढ़ता है। इससे बच्चों में अन्य कुप्रवृत्तियाँ निर्माण हो रही हैं। यही मिश्र जी ने विवेच्य उपन्यासों के कुछ पात्रों द्वारा स्पष्ट किया है। शुक्ला, मालती, राजन जैसे पात्र असफल प्रेम, अनमेल विवाह, पत्नी की अधिकार भावना, बेटों का मन-माना व्यवहार आदि के कारण घुटनमरी जिंदगी जी रहे हैं। जिससे यौन समस्या निर्माण होकर अनैतिक संबंध, बलात्कार जैसी भीषण समस्याएँ निर्माण हो रही हैं।

इस तरह मिश्र जी समाज जीवन की समस्या को पाठकों के सामने रखकर समस्याओं पर सोचने लिए बाध्य करते हैं।

संदर्भ संकेत

1. गोविंद मिश्र, पाँच आँगनोवाला घर, पृ. 142
2. वही, लाल पीली जमीन, पृ. 202
3. डॉ.चंद्रकांत बांदिवडेकर, गोविंद मिश्र सृजन के आयाम, पृ. 88
4. गोविंद मिश्र, पाँच आँगनोवाला घर, पृ. 93
5. प्रो.प्रेमशंकर , लेख - पाँच आँगनोवाला घर, पृ. 1
6. गोविंद मिश्र, लाल पीली जमीन, पृ. 40
7. वही, पृ. 254
8. वही, पृ. 282
9. वही, पृ. 283
10. वही, वह अपना चेहरा, पृ. 10
11. वही, तुम्हारी रोशनी में, पृ. 24
12. वही, पृ. 62
13. वही, वह अपना चेहरा, पृ. 22
14. वही, पृ. 62
15. वही, पृ. 9
16. वही, लाल पीली जमीन, पृ. 261
17. वही, पाँच आँगनोवाला घर, पृ. 187-188
18. वही, लाल पीली जमीन, पृ. 39
19. वही, पृ. 39
20. वही, तुम्हारी रोशनी में, पृ. 14
21. वही, लाल पीली जमीन, पृ. 35
22. वही, पाँच आँगनोवाला घर, पृ. 22
23. वही, वह अपना चेहरा, पृ. 23
24. वही, तुम्हारी रोशनी में, पृ. 70

25. डॉ.चंद्रकांत बांदिवडेकर, गोविंद मिश्र सृजन के आयाम, पृ. 101

26. गोविंद मिश्र, लाल पीली जमीन, पृ. 231

27. वही, तुम्हारी रोशनी में, पृ. 14

28. डॉ.अर्जुन चव्हाण, राजेंद्र यादव की कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन, पृ. 139